पंचम अध्याय

नरेंद्र कोहली के आलोच्य नाटकों के भाषाशिल्प का अनुशीलन

“नरेंद्र कोहली के आलोच्य नाटकों के भाषाशिल्प का अनुशीलन”

5.1. नाटक और भाषा -

नाटक की भाषा रंगमंच और प्रेक्षक से सीधी जुड़ी होने के कारण साहित्य की अन्य विधाओं से पृथक होती है। डॉ. नेमिचंद्र जैन के अनुसार - “नाटक की भाषा में एक साथ ही काव्य जैसी गहन लाक्षणिकता, सूक्ष्मता और चित्रवत्ता और बोलचाल की भाषा की सी मूर्तता, प्रवाह और सरलता आवश्यक होती है। उसमें परकता, विशिष्टता और साहित्यिकता भी।”[1] किंतु नरेंद्र कोहली असंगत नाटककार होने के कारण उनकी नाट्यभाषा परंपरागत नाटकों की भाषा से कुछ भिन्न है। उन्होंने अपने नाटकों में सामान्य बोलचाल की भाषा को अधिक महत्त्व दिया है, इसलिए ‘शम्बूक की हत्या’, ‘हत्यारे’, ‘निर्णय रूका हुआ’ नाटकों की भूमिका में ‘मुखौटेवाले शब्दों की भाषा को अस्वीकार करते हुए वे नंगे शब्दों के नंगे चेहरे की हिमायत करते हैं। जैसे- “अबे अंधे की औलाद। तेरी आँखें हैं कि कौलडोडे! सड़क तुझे दहेज में मिली है कि हटेगा ही नहीं? अबे माँ के खसम! अभी तेरे बाप की कार तेरा कीमा बना जाती, तो उसे हम झटकेवाली दुकान पर भेजते या हलालवाली दुकान पर? बोल! अबे यहाँ मीट खाने में भी सांप्रदायिकता है। समझा? तेरे एक्सिडेंट के पीछे शहर में सांप्रदायिक दंगा हो जाता।”[2]

नाटक की भाषा के संबंध में और उसके स्वरूप के विषय में आरंभ से ही भिन्न-भिन्न दृष्टियाँ प्रस्तुत की जाती रही हैं। एक दृष्टि अलकारवादियों की है। इनके अनुसार नाटक की भाषा उच्चस्तरीय होनी चाहिए, क्योंकि उच्चस्तरीय भाषा में ही उच्च कोटि की अनुभूतियों के वहन की क्षमता होती है। अलंकारवादी नाटक को ‘दृश्यकाव्य’ मानते हैं और भाषा के अलंकरण के पक्ष में हैं। इनका कहना है कि संवेदना संप्रेषणीयता का अधिक प्रभावी माध्यम होने के कारण दृश्य काव्य में भाषा की उपयोगिता बहुत अधिक होती है। नाटक के संवाद केवल पात्रों द्वारा प्रयुक्त शब्दों-वाक्यों के समूह मात्र नहीं होते। “वह तो संवेदनात्मक स्थितियों का परिचायक सशक्त शब्द-चयन है, उसे वाणी के समस्त आभूषणों को धारण करना चाहिए, अन्यथा वह अपनी संपूर्ण अभिव्यंजना शक्ति को प्राप्त नहीं कर सकता है।”[3] दूसरी दृष्टि प्रकृतिवादियों की है। उनकी

मान्यता है कि नाट्य यथार्थ की अनुकृति है। अतः उसकी भाषा को भी जनसाधारण के समझने के लिए सरल एवं सुगम होनी चाहिए। ऐसी भाषा ठेठ जीवन की, रोजमर्रा की जिंदगी से चुनी हुई होनी चाहिए। ये दोनों ही 'दृष्टियाँ' अतिवादी हैं। नाटकों की भाषा के संबंध में स्वस्थ दृष्टिकोण यह है कि उसे संवेदनाओं की स्थिति के अनुरूप सहज स्वाभाविक होना चाहिए। उसमें सरसता एवं रोचकता होनी चाहिए। नाटककार को थोड़े समय में बहुत कुछ कहना होता है। यह तभी संभव है, जब वह प्रयुक्त होनेवाली भाषा के सही शब्दों का चयन करे और उसमें प्रभाव पैदा करे। नरेंद्र कोहली के नाटकों में सामान्य जनसाधारण भाषा का प्रयोग है। उनके नाटकों में नाटकीय भाषा के सभी अंदाज विद्यमान हैं। संवादों द्वारा चरित्र का पता चलना, अंग-संचालन के लिए सहायक होना, कम शब्दों में अधिक कह देना आदि विशेषताएँ कोहलीजी की भाषा में है। जैसे- "उत्पादन की व्यवस्था तो मनुष्य की बनाई हुई है। जिसके पास अधिकार है, वह वितरण व्यवस्था को ऐसे मोड़ता है कि सारा लाभ उसे ही पहुँचे। जिनके पास अधिकार नहीं है, वे व्यवस्था को भ्रष्ट कर, या व्यवस्था के बाहर हो, उसे तोड़कर अधिक लाभ पाने का प्रयत्न करते हैं।"[4]

वास्तव में नाटक रंगमंचीय विधा है और नाटक के पात्र रंगमंच पर भाषा का प्रत्यक्ष प्रयोग करते हैं। फिर यह भी ध्यातव्य है कि प्रत्येक पात्र की अपनी योग्यताएँ और विशिष्टताएँ होती हैं। यही कारण है कि नाटक की भाषा मूलतः अर्थ सीमित नहीं होती। साहित्य की अन्य विधाओं की भाषा जहाँ सीधी अर्थाभिव्यक्ति करती है वहाँ नाटक की भाषा काफी हाशिया छोड़ देती है, इसलिए नाटक की भाषा साहित्यिक व्यंजनाओं से मुक्त होने के बावजूद यह भाषा अर्थहीन भी होती है, और गहरी भी। नरेंद्र कोहली के नाटकों में मानवीय संवेदनाओं को वाणी देनेवाली भाषा का प्रयोग हुआ है। मानवीय नियति की त्रासदी उभारना उनके नाटकों का एक प्रमुख उद्देश्य है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपने नाटकों में वे मानवीय संवेदनाओं की भाषा प्रयुक्त करते हैं। 'हत्यारे' नाटक में उन्होंने इसकी स्वीकृति देते हुए कहा है- 'नाटक की भाषा मानवीय संवेदनाओं की भाषा है, बौद्धिकता की नहीं।' उदाहरण द्रष्टव्य है- "शांति : अभी क्या है, अभी तो ये एक से एक भयंकर बिमारियों का नाम ले-लेकर मुझे डराएँगें, तड़पाएँगे। ये तो चाहेंगे ही कि मेरी नींद हराम हो जाए और मैं रातभर बिस्तर पर करवटें बदलती रहूँ....।"[5]

नाटक की भाषा केवल 'शब्दों' से ही नहीं बनती। शब्दों को विशिष्ट क्रम में रखा जाना भी आवश्यक होता है। इस क्रम के विधान के कारण प्रत्येक नाटककार की भाषा एक-दूसरे से भिन्न हो जाती है। इसी के आधार पर नरेंद्र कोहली के नाटकों की नाट्यभाषा में व्यंग्य-शैली का समावेश है। इसलिए भाषा-प्रयोग की दृष्टि से नरेंद्र कोहली के नाटकों की भाषा में जीवंतता के साथ-साथ एक अद्भूत आकर्षण है। उनकी भाषा में समकालीन जीवन के तनाव को पकड़ने की शक्ति बहुत है। नरेंद्र कोहलीजी ने अपने नाटकों की भाषा बोलचाल की प्रयुक्त की है। फिर भी इसमें नाटक को गतिशीलता प्रदान करने की पूरी क्षमता है। आलोच्य नाटकों की भाषा के अंतर्गत निम्न रूपों का अध्ययन आवश्यक है।

5.2 शब्दों के विविध रूप -

नरेंद्र कोहलीजी के आलोच्य नाटकों में शब्दों के विविध रूप प्रयुक्त हुए हैं। जैसे तत्सम् शब्द, तद्भव शब्द, विकृत शब्द, विदेशी शब्द, अंग्रेजी शब्द तथा अपशब्द इसके साथ ही भाषा में सौंदर्य लाने के लिए विशेषण, मुहावरों, कहावतों, सूक्तियाँ और वाक्य योजना का भी प्रयोग हुआ है। इसीकारण नरेंद्र कोहली के नाटकों की भाषा सहजता और सौंदर्य की अभिव्यक्ति करती है।

5.2.1 तत्सम शब्द -

नरेंद्र कोहलीजी के आलोच्य नाटकों की भाषा में तत्सम शब्दों का प्रयोग कहीं-कहीं पर मिलता है। नाटक के पातों की स्थिति के अनुसार भाषा का प्रयोग करना नाटककार की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। नरेंद्र कोहलीजी ने सहजता से नाटक के पात्रों के अनुसार तत्सम शब्दों का उपयोग किया है जिसमें भावों की अभिव्यक्ति तथा बोध मिलता है। भाषा को सहज प्रवाहित करनेवाले निम्न तत्सम शब्द हिंदी में घुलमिल गए हैं।

नरेंद्र कोहली के 'शम्बू की हत्या' नाटक में तत्सम शब्द- ''अन्न, अकाल, मार्ग, भक्ति, लाभ, कृष्ण, समाचारपत्र, कर्म, क्षेत्र, पुस्तक पुत्र, क्रोध, भविष्य।''[6] नरेंद्र कोहली के 'हत्यारे' नाटक में तत्सम शब्द - ''लाभ, समाचार, नमस्कार।''[7] नरेंद्र कोहली के 'निर्णय रूका हुआ' नाटक में तत्सम शब्द - ''कृष्ण, समाचारपत्र, मकान, भविष्य, स्वयं, पति।''[8]

5.2.2 *तद्भव शब्द* -

संस्कृत भाषा हिंदी भाषा की जननी होने के कारण हिंदी में जिस तरह तत्सम शब्द आए हैं, उसी तरह देशी भाषाओं से तथा प्रसंग और परिस्थिति के अनुसार तद्भव शब्द भी हिंदी में मिलते हैं। इन शब्दों से नाटक की भाषा आम आदमी के जीवन की भाषा बनती है।

'शम्बूक की हत्या' नाटक में तद्भव शब्द - 'मैं, अब, जहाँ, ऊपर, जब, कुर्सियाँ, कागज।''[9] 'हत्यारे' नाटक में तद्भव शब्द - ''कुर्सियाँ, मैं, आप, अब, जब, कब, वे, मुँह, नीचे, घर, पीछे।''[10] 'निर्णय रूका हुआ' नाटक में तद्भव शब्द - ''चाहे, कागज, उलझे, हाथ, आग, काम, बात।''[11]

5.2.3 *स्थानीय या देशज शब्द* -

नरेंद्र कोहलीजी के नाटकों की भाषा में ज्यादातर स्थानीय या देशज शब्दों का प्रयोग हुआ है।

'शम्बूक की हत्या' नाटक में स्थानीय या देशज शब्द ''खसम, नष्ट, चमड़ी, हरामजादे, श्मशान, भूत-पिशाच, चुड़ैल, संतरी, दवा, शासक, पकाया।''[12] 'हत्यारे' नाटक में स्थानीय या देशज शब्द - ''दवा, बोरिया-बिस्तर, अकल, झगड़ा, गले, मढ़, जुबान, अनिच्छा, भन्नाई, खूसट, खटर-पटर, खटखटाया, दिन-दहाड़े, नापता-तौलता, चख-पख, ललकारा, कोठरी, अजीब-अजीब, मर, पियक्कड़, संगत, गली, औकात, पुरखिन, इकलौते, अंदाजन, रांड, मूँग, दलने।''[13] 'निर्णय रूका हुआ' नाटक में स्थानीय या देशज शब्द - ''कूदा, चावडी-बाजार, कोठी, खुलवाओ, काले, दुहराना, अधबना, टिकाता, व्यापार, किस्तों, धन्नासेठ, सालभर, अंतीव, संभव, जमापूँजी, चमगादड़ों, जायदाद, झोली, कोसते, स्यापा, अटककर, सड़ी, टपक, तोरण, दिलवाइए, दीराहे, अड़ा, अंधेरखाता, धोती, अड़ोसा, चोट, ग्राम-चक्कर, पक्के, राम-राम, रुपए, लोलुपता, गोबर, लोटा, टोकेगा, बिलैत, ढा, मलबा।''[14]

5.2.4 *अंग्रेजी शब्द* -

नरेंद्र कोहली ने आधुनिक नाटककार होने के कारण उनकी भाषा में अंग्रेजी शब्दों का प्रभाव दिखाई देता है।

'शम्बूक की हत्या' नाटक में अंग्रेजी शब्द - ''बुलडोजर, सिगनल, ट्रैपिक, एक्सिडेंट, मिनिस्टर, फिक्सड-डिपाजिट, काँस्टेबल, प्रेजेण्ट, पुलिस, पब्लिक स्कूल, इण्टरव्यू,

पार्लियामेंट मेंबर, टीचर, योर, हाइनेस, पर्सनल असिस्टेंट रिसेप्शनिस्ट, पासपोर्ट, काऊँटर, क्लर्क, फैक्टस।''[15]

'हत्यारे' नाटक में अंग्रेजी शब्द - ''ड्राइंगरूम ऑपरेशन, डॉक्टरों, स्कूली, पापा, फैमिली प्लानिंग, सीरियस, इमीजिएटली, मम्मी, एक्सिडेंट, बंबई, हॉस्पिटल, फोन, लाइन, नंबर, एक्सचेंज, बिजनेस, केबलस, सिसेयेरिटी, प्राइवेट, कंपनियों, एम्लॉयीज, ब्रांडी, हैलो, रिटायर, ड्रिंक, रिजर्वेशन, फ्लाइट, पैकिंग, पोस्टकार्ड।''[16]

'निर्णय रूका हुआ' नाटक में अंग्रेजी शब्द - ''ड्राइंगरूम, आर्किटेक्ट, किचन, स्टोर, स्टील, फर्म, स्पेशलाइजेशन, कॉमर्स, बिजनेस, मैनेजमेंट, जिऑलोजी, सेकण्ड, वर्ल्ड, फिटिंग्स, प्रॉविडेंट फंड, बाथरूम, टाइटस, प्रॉमिस, पेपर, न्युज, एशियन गेम्स, क्लर्ड, मीटिंग, पापा, डोन्टवरी, लोन, कोर्ट, मैजिस्ट्रेट, युनिफॉर्म, पुलिस, इन्स्पेक्टर।''[17]

5.2.5 उर्दू, अरबी, फारसी शब्द -

उर्दू शब्दों का सहज स्वाभाविक प्रयोग हिंदी में होता है। उर्दू शब्दों का मूल स्रोत अरबी और फारसी है। उर्दू, अरबी, फारसी कई ऐसे शब्द हैं जो हिंदी में स्वीकार हो चुके हैं। नरेंद्र कोहलीजी ने इन भाषाओं के शब्दों का प्रयोग कथाविकास के लिए अपने नाटकों में किया है।

'शम्बूक की हत्या' नाटक में उर्दू, अरबी, फारसी शब्द - ''सरकारी, शायद, कुर्सी, खतरनाक, चपरासी, बदपरहेज, शरीर।''[18] 'हत्यारे' नाटक में उर्दू, अरबी, फारसी शब्द - ''अलमारी, दीवार, शरीर, शायद, लिफाफा, बीमार, लापरवाह, हराम, बिस्तर, नींद, खरीदा, पुरानी, थमाया, फूँकना किस्सा, घबराइए, झूठ, परेशान, गंभीर, कमरे, बुरा, हत्या, कोठरी, लूट, पुराने, वक्त आबादी, ईमानदारी, अखबारों, दरवाजा, दीवार, किताब, शागिर्दी, ईमानदार, उस्ताद, शराब।''[19] 'निर्णय रूका हुआ' नाटक में उर्दू, अरबी, फारशी शब्द - ''अलमारियाँ, महँगी, खानों, लोहा, सब्जी, बाजार, तौलकर, गमलों, शहर, औपचारिक, पचासेक, प्रशासन, मकान, देहाती, टोकेगा, मिट्टी, दुबारा, वकील, संपत्ति।''[20]

5.2.6 विकृत शब्द -

परिस्थिति तथा वातावरण का प्रभाव निर्माण करने के लिए विकृत शब्द का प्रयोग किया है।

'शम्बूक की हत्या' नाटक में विकृत शब्द - ''खसम, हलालवाली, उत्कोच, बौखलाओ, बदपरहेजी, पंड्डीजी, भिड़ंत, रफूचक्कर।''[21] 'हत्यारे' नाटक में विकृत शब्द- ''अचकचाकर, मठ, चटखोर, रांड।''[22] 'निर्णय रूका हुआ' नाटक में विकृत शब्द- ''चामगादड़ों, भभक, भद्दी, पचड़ो, गलौज, भेड़चाल, गरसाल, भड़वे, उघम।''[23]

5.2.7 अपशब्द -

नाटक की भाषा को पात्रानुकूल बनाने के लिए अपशब्दों का प्रयोग किया जाता है। विषम परिस्थिति के प्रति अपना विरोध प्रकट करने के लिए या किसी विशिष्ट परिस्थिति की यथार्थता का आभास दिलाने के लिए तो कभी-कभी पात्रों की मनोव्यवस्था को उजागर करने के लिए अपशब्द का प्रयोग किया जाता है।

'शम्बू की हत्या' नाटक में अपशब्द - ''साला, बाप की सड़क, अंधे की औलाद, बौड़म, घनचक्कर, कूड़े-कर्कट, भेजा, चिंचिआने।''[24] 'हत्यारे' नाटक में अपशब्द - ''नालायक, पियक्कड़, गला घोंटकर, बकवास।''[25] 'निर्णय रूका हुआ' नाटक में अपशब्द - ''अड़ा, भद्दी, नालायक, लोलुपता, हरामखोर, साले, बटाठार, मुस्तैदी, बक्काल।''[26]

5.2.8 समानार्थी युग्म शब्द -

पात्रों की भाषा का प्रभाव दिखाने के लिए एक ही शब्द के समानार्थी युग्म शब्द का प्रयोग किया जाता है।

'शम्बूक की हत्या' नाटक में समानार्थी युग्म शब्द - ''सब-कुद, बड़े-छोटे, पतले-मोटे, ऐसी-तैसी, लेना-देना, पढ़ने-लिखने, जिस-तिस, हेरा-फेरी, खाने-पीने, हक्का-बक्का, सच-झूठ, माल-वाल।''[27] 'हत्यारे' नाटक में समानार्थी युग्म शब्द- ''छोटी-बड़ी, नौकर-चाकर, सोचे-समझे, चढ़ते-उतरते, काम-धाम, सिर-दर्द, इच्छा-अनिच्छा, थोड़ी-बहुत, आमने-सामने, खटर-पटर, नापता, तौलता, हाथ-पाँव।''[28] 'निर्णय रूका हुआ' नाटक में समानार्थी युग्म शब्द - ''पढ़ने-लिखने, निरख-परख, सुध-बुध, ऐसा-वैसा, आस-पास, लेना-देना, उलटते-पलटते, छोटा-मोटा, लकड़ी-वकड़ी।''[29]

5.2.9 द्विरूक्त शब्द -

भाषा का प्रभाव पात्रों के द्वारा स्पष्ट करते समय एक ही शब्द को दो बार एक साथ प्रयुक्त किया जाता है उसे द्विरूक्त शब्द कहा जाता है।

'शम्बू की हत्या' नाटक में द्विरूक्त शब्द- ''जगह-जगह, बड़े-बड़े, शून्य-शून्य, मारते-मरते, ठीक-ठीक, देखते-देखते, बैठे-बैठे, घूर-घूर, खड़े-खड़े, पास-पास, कुछ-कुछ, लंबे-लंबो, कभी-कभी।''[30] 'हत्यारे' नाटक में द्विरूक्त शब्द - ''कब-कब, बैठे-बैठे, नहीं-नहीं, ठीक-ठीक, हॅलो-हॅलो, अपना-अपना, कहता-कहता, बहुत-बहुत, बारह-बारह, साथ-साथ, जहाँ-जहाँ, चख-चख।''[31] 'निर्णय रूका हुआ' नाटक में द्विरूक्त शब्द ''रोज-रोज, बारी-बारी, बड़ी-बड़ी, बक-बक, पहले-पहले, खड़ी-खड़ी, लगा-लगा, भेजते-भेजते, अपनी-अपनी, हाँ-हाँ, साथ-साथ, आइए-आइए, राम-राम।''[32]

5.2.10 **विशेषण -**

नाटक की भाषा में नए विशेषणों का सृजन करके उनके प्रयोग से ही शब्दों को नई अर्थवत्ता मिठती है। विशेषणों के प्रयोग से भाषा-सौंदर्य की अभिवृद्धि हुई है।

'शम्बू की हत्या' नाटक में विशेषण - ''रेगिस्तानी दृष्टि, झुग्गी झोपड़ी, कुशाण सम्राट, दृढ़ आवाज, छिछली बहस, चतरंगिनी सेना, काला धन, ध्रुव पंडित, अकड़ू मियाँ, सिंह दृष्टि।''[33] 'हत्यारे' नाटक में विशेषण - ''सिर आँखों, भाग्यशालिनी, जड़ मुद्रा, खूँखार भाव, चहलकदमीसी, कोमल पत्रों, गहरी दृष्टि।''[34] 'निर्णय रूका हुआ' नाटक में विशेषण- ''दृढ़ स्वर, उत्तेजित स्वर, नकली-भद्दी हँसी, पूज्य पिताजी, पक्के आदमी, करूण दृष्टि, फूहड़ हँसी, उल्लसित झेंप।''[35]

5.2.11 मुहावरें -

किसी भी रचना की भाषा को प्रभावी बनाने के लिए मुहावरों का प्रयोग किया जाता है। नरेंद्र कोहलीजी में नाटकों की भाषा में मुहावरों का प्रयोग करके भाषा में वक्रता उत्पन्न करके सूक्ष्म से सूक्ष्म भावों को भी तीक्ष्ण बनाने का प्रयास किया है।

'शम्बू की हत्या' नाटक में मुहावरें -

1) ''उपेक्षित कर देना''[36]
2) ''हड्डियाँ चबाना''[37]
3) ''ठुकरा देना''[38]
4) ''हाथ बँटाना''[39]

5) ''भ्रमित कर देना''[40]

6) ''असफल हो जाना''[41]

7) ''दफा हो जाना''[42]

'हत्यारे' नाटक में मुहावरें -

1) ''हाथ धोकर पीछे पड़ना''[43]

2) ''नींद हराम हो जाना''[44]

3) ''करवटें बदलना''[45]

4) ''चक्कर काटना''[46]

5) ''सिर झुकाना''[47]

6) ''झूठा प्यार जताना''[48]

7) ''खून चूसना''[49]

'निर्णय रूका हुआ' नाटक में मुहावरें -

1) ''मुँह न खुलवाना''[50]

2) ''सुध-बुध भूल जाना''[51]

3) ''क्रोध पी जाना''[52]

4) ''हिम्मत बटोरना''[53]

5) ''अधूरा छोड़ देना''[54]

6) ''झोल में पड़ना''[55]

7) ''शोभा बढ़ाते रहना''[56]

8) ''नाक में दम करना''[57]

9) ''बीच दोराहे पे खड़ा होना''[58]

10) ''काम से काम रखना''[59]

11) ''दाने-दाने को तरसना''[60]

5.2.12 सूक्तियाँ -

जीवन की सत्य अनुभूति को ही सूक्तियों के रूप में रखा जाता है। सूक्ति जीवन के अनुभव का गहन चिंतन और लेखक की प्रतिभा और क्रांतिदर्शिता का उत्कृष्ठ उदाहरण है।

वास्तविक स्थिति का अनुभवों के बल पर किया गया वर्णन सूक्तियों के अतिरिक्त अन्य किसी विद्या में नहीं मिल सकता।

'शम्बू की हत्या' नाटक में सूक्तियाँ-

1. पैसे और सरकार में अवैध-संबंध हैं। पैसा इस राजनीतिक वेश्या का यार है। पैसे ने सरकार बनाई है और सरकार ने धनवान बनाए हैं।''[61]
2. ''रिश्वत तो शराब है, जिसमें प्यास बढ़ती है। तृप्ति उससे कभी नहीं होती।''[62]
3. ''यह रिसर्च बड़ी बढ़िया चीज है। यह आधुनिक युग की पारसमणि है। इस मणि के छूते ही महान जड़ बुद्धि लोग विश्वविद्यालयों के सिर पर चढ़कर नाचने लगते हैं।''[63]
4. ''जिन लोगों के पास अपनी भाषा नहीं होती, उनकी रोटी भी उनके पास नहीं रहती।''[64]
5. ''रोटी जागृति से मिलती है और जागृति अपनी भाषा से आती है।''[65]

'हत्यारे' नाटक में सूक्तियाँ -

1. ''बच्चों को उनके माँ बाप ही पालते हैं, तो बाद में माँ-बाप को बच्चे ही पालते हैं।''[66]
2. ''आदर्श बहुत मीठे लगते हैं, सच बड़ा कड़वा होता है....।''[67]
3. ''.....महान लोगों का संपर्क बड़ा रोमांचक लगता है। हम भी आवेश में आ जाते हैं, पर सचमुच तो हम वीर होते नहीं।''[68]
4. ''हे भगवान ! तू किसी से उसकी संतान ऐसे मत छीन। जब संतान दी ही है, तो उसकी रक्षा कर।''[69]
5. ''हमारी पुलिस किसी को खाती नहीं धीरे-धीरे चूसती भर है। ....पुलिस यह नहीं सोचती कि अपराध किसने किया है, उससे क्या मिलेगा और जिसका अपराध हुआ है वह क्या देगा ?''[70]
6. ''आदमी बच्चे क्यों माँगता है- अपने सुख के लिए ही तो ? यह कामना तो कोई नहीं करता कि उसके बच्चे बड़े होकर उसका खून पिएँ। ऐसी संतान से तो संतान का न होना ही अच्छा।''[71]
7. ''सड़क पर किसी के चाकू से मरकर लावारिस लाश के रूप जलना सम्मानजनक है या किसी भले घर में बहू के रूप में मरकर भले लोगों के कंधे पर श्मशान घाट जाना....''[72]

'निर्णय रूका हुआ' नाटक में सूक्तियाँ-

1. "पहले बाप बच्चों को नैतिकता सिखाता था, अब बच्चे बाप को अनैतिकता सिखाते हैं।"[73]
2. "पता नहीं, इस देश में कानून किसके लिए बनते हैं। यहाँ तो स्वयं स्त्री होकर भी माँ नहीं चाहती कि बेटी को जायदाद का हिस्सा....."[74]
3. "मामला साफ है। मकान गिरता। उसके नीचे दबकर कोई मरता। हम हत्या का मामला बनाते। तुम डरकर हमारी सेवा करते और तुमने उसमें रूकावट डाल दी...."[75]
4. "क्यों, सरकार क्या केवल चंदा, महसूल, टैक्स और रिश्वत लेने के लिए है ? देश के अच्छे-बूरे को जिम्मेदार कौन है ?"[76]
5. "कानून भी प्रकृति के सत्य के समान हो सबके हित के लिए, सबके सुख के लिए। जो सुख का विस्तार करे, वह कानून और जो उसे संकुचित-संकीर्ण करे, सीमित-आरक्षित करे वह अन्याय !"[76]

5.2.13 वाक्य विन्यास -

नाटक में कथानक की नवीनता का सार्थक प्रयोग करने के लिए नाटककार नई वाक्य परंपरा की शुरूआत करता है। नवीन वाक्यों के प्रयोग में पात्रों की मानसिक अवस्था के अनुकूल अधुरे वाक्यों का भी सहारा लिया जाने लगा। इसका परिणाम नए वाक्यों का प्रयोग आधुनिक युग में होने लगा है।

'शम्बू की हत्या' नाटक में वाक्य विन्यास -

1. "मैं किसी और युग से आया हुआ व्यक्ति हूँ, अतः तुम्हारी बात ठीक से समझ नहीं पाया, हे शासक क्लर्क।"[78]
2. "सब ही लेते थे, पर रामलुभाया उत्कोच नहीं लेता था। किसी को किसी से शरम नहीं थी, क्योंकि सब लेते थे। नहीं लेता था, तो एक रामलुभाया।"[79]

'हत्यारे' नाटक में वाक्य विन्यास -

1. "तो क्या तय किया है पापा, आपने ?"[80]
2. "यह बीच में ऑपरेशन कहाँ से टपक पड़ा ? तंबाकू शराब और ऑपरेशन में बहुत फर्क है, पापा !"[81]

3. ''आप थोड़ा सो लीजिए, मम्मी !''[82]

4. ''सोचा मेरे ही बच्चे को बड़प्पन दे रहे हैं, तो मैं उन्हें क्यों रोकूँ। पर यह अच्छा नहीं हो रहा, बेटी।''[83]

5. ''इतनी ही तो कर्तव्य निष्ट है आपकी सरकार।''[84]

'निर्णय रूका हुआ' नाटक में वाक्य विन्यास -

1. ''मान जाइए, शर्माजी !''[85]
2. ''बैठो, बेटी।''[86]
3. ''बोलिए, कितनी चाहिए ? क्यों माहेश्वरी !''[87]
4. ''रमेसरा ! अरे ओ रमेसरा !''[88]
5. ''बहुत मेहरबानी सरकार !''[89]

5.2.14 हिंदी-अंग्रेजी शब्दों से बने मिश्र वाक्य -

'शम्बूक की हत्या' नाटक में मिश्रवाक्य -

1. ''मैं राष्ट्रपति के पी. ए. के पर्सनल असिस्टेंट का रिसेप्शनिस्ट हूँ।''[90]
2. ''शम्बूक कमीशन लिए बिना रेल्वे-रिजर्वेशन देनेवाला रेल्वे कंडक्टर है।''[91]

'हत्यारे' नाटक में मिश्रवाक्य -

1. ''दीज आर द प्लेन फैक्टस ऑफ लाइफ। जब पापा ने मुझे नोटिस दिया था तो मैंने भी अपने लिए बहुत सारे धंधे सोचे थे। मैंने, यू बिलीप इट कि मैंने स्कूल में पढ़ते हुए भी, स्टैंड के एक टैक्सी-ड्राइवर के पास पार्टटाइम शार्गिदी की थी।''[92]
2. ''एक ब्रांच बंद कर, फुटपाथ पर भी तो तुमने ही फेंक दिया था उसे।''[93]

'निर्णय रूका हुआ' नाटक में मिश्रवाक्य -

1. ''सिमेंट की शेल्फों से तो ड्राइंगरूम भी किचन या स्टोर लगने लगता है। ....और स्टील की अलमारी ! लगेगा, किसी घटिया फर्म का दफ्तर है।''[94]
2. ''पापा ! पेपर में न्यूज है कि एशियन गेम्स से पहले-पहले कलर्ड टी. वी. बाजार में आ जाएगा।''[95]
3. ''डोन्ट वरी, मम्मी ! पापा कुछ कह भी देंगे, तो मैं सह लूँगा।''[96]

4. ''ओफ्फो, पापा ! Why do you create so much of fun ? कहीं से भी लोन ले लीजिए।''[97]

5. ''जानता हूँ, you people are now grown-ups बच्चे नहीं हो।''[98]

5.2.15 अंग्रेजी वाक्य -

'शम्बू की हत्या' नाटक में अंग्रेजी वाक्य -

1. ''डियर सर, प्लीज रेफर टू योर लेटर नंबर सो एण्ड सो, डेटेड सच एण्ड सच।''[99]

'हत्यारे' नाटक में अंग्रेजी वाक्य -

1. ''रमेश सीरियस ! कम इमीडिएटली।''[100]
2. ''आयम सॉरी।''[101]

'निर्णय रूका हुआ' नाटक में अंग्रेजी वाक्य -

1. ''प्रॉमिस''[102]
2. ''May I have your permission Papa ''[103]

5.2.16 व्यंग्य वाक्य -

''वि + अंग'' = व्यंग से व्यंग्य की व्युत्पत्ति मानी गई है। व्यंग्य का प्रयोग केवल हंसी मजाक के लिए न होकर कुछ उद्‌देश्य को लेकर किया जाता है। नाटककार अपनी हँसी मजाक के सहारे सामाजिक कुरीतियों को दंड देना चाहता है, तब व्यंग वाक्यों का निर्माण होता है। नरेंद्र कोहलीजी को व्यंग्य नाटककार के रूप में पहचाना जाता है। उन्होंने अपने आलोच्य नाटकों में सामाजिक और राजनीतिक यथार्थ पर चोट करनेवाले अनेक व्यंग्यात्मक प्रसंग प्रस्तुत किए हैं।

'शम्बू की हत्या' नाटक में व्यंग्य वाक्य -

1. ''तुम शायद यह नहीं जानते कि पैसे और सरकार में अवैध संबंध है। पैसा इस राजनीतिक वेश्या का यार है।''[104]
2. दशरथ ! तू राक्षसों को मार देगा, तो अगले चुनाव में तुझे वोट कौन देगा ? तेरे चुनाव-फंड में धन कहाँ से आएगा ?''[105]

'हत्यारे' नाटक में व्यंग्य वाक्य -

1. ''जीवित शरीर की चीर-फाड़। मुझे डॉक्टरों का यह हत्यारापन अच्छा नहीं लगता।''[106]

2. ''काम-धाम का बोझ तो समझ में आता है, पर.....यहाँ तो एक्सचेंज क्या, केवल क्या, आदमी क्या- सब कुछ ही सड़ा हुआ है। व्यवस्था ही सड़ रही है....''[107]

'निर्णय रूका हुआ' नाटक में व्यंग्य वाक्य -

1. ''पहले बाप बच्चों को नैतिकता सिखाता था, अब बच्चे बाप को अनैतिकता सिखाते हैं।''[108]
2. ''यह भारत सरकार का प्रमाण-पत्र है। इसे सौ रुपए का नोट भी कहते हैं।''[109]
3. ''वकील को अपने यजमान से पैसा लेकर, कानून को उसके पक्ष में मरोड़ना होता है- उचित हो या अनुचित....।''[110]

निष्कर्ष -

भाषा प्रयोग की दृष्टि से नरेंद्र कोहली के नाटक महत्त्वपूर्ण हैं। इन नाटकों की भाषा में जीवंतता के साथ-साथ एक अद्भूत आकर्षण है। इसकी भाषा में समकालीन जीवन के तनाव को पकड़ने की शक्ति भरपूर है। शब्द-चयन, शब्द-संयोजन, वाक्य-विन्यास, प्रतीक, बिंब-विधान सब कुछ इसमें ऐसा है, जो कथ्य पक्ष को संपर्णूता से अभिव्यक्त करता है। उनकी नाट्य-रचनाएँ बोलचाल की भाषा में है, मगर इसमें भी गतिशीलता है। नरेंद्र कोहलीजी के नाटक में मुख्य भूमिका वस्तुतः शब्दों की ही है। उनके नाटक समकालीन जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्षों को सशक्तता से व्यंजित करते हैं। उनके नाटकों की आडंबरहीन बोलचाल की भाषा है। नाटककार ने इन नाटकों की भाषा को कहीं से भी साहित्यिक अथवा काव्यात्मक रूप देने का प्रयास नहीं किया है। नरेंद्र कोहलीजी के नाटक का प्रत्येक शब्द पात्रों की क्रियाओं से जुड़ा हुआ मानसिक अंतर्द्वंद्व, तनावपूर्ण वातावरण को अभिव्यक्त करने में पूर्ण सक्षम है। नाटक के पात्र भाषा के द्वारा समूचे व्यक्तित्व को स्पष्ट कर देते हैं। नाट्य-भाषा में व्यंग्य-शैली का समावेश नरेंद्र-कोहली ने 'शम्बूक की हत्या' नाटक में किया है। नरेंद्र कोहलीजी ने अपने नाटकों में जीवन-परिवेश के भीतर ही पात्रों के मानसिक तणावों, आशा-आकांक्षाओं, संकल्पों, कुंठाओं और विकृतियों को भाषिक तत्वों द्वारा अंकित किया है। इसके अनुरूप ही शब्द चयन एवं वाक्य संरचना का प्रयोग किया है।

नरेंद्र कोहली के सभी नाटकों में आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग हुआ है। मंचन की दृष्टि से इस भाषा का विशेष महत्त्व है। उनकी भाषा की यह विशेषता है कि जितना वे भाषा के

माध्यम से कहते हैं, उससे कहीं अधिक अभिव्यक्ति होती है। कम शब्दों में वे बहुत कुछ कह जाते हैं। अर्थात उनकी भाषा में अर्थ विशिष्टताएँ पैदा करने की गुंजाइश अधिक है। 'शम्बूक की हत्या' नाटक में ब्राह्मण क्लर्क को भाषा से रोटी का महत्त्व बताते हुए कहता है- मैं जानता हूँ, महान क्लर्क ! लोगों की रोटी छीनने के लिए ही तुमने उनकी भाषा छीन ली है। तुम यह बात अच्छी तरह जानते हो कि जिन लोगों के पास अपनी भाषा नहीं होती, उनकी रोटी भी उनके पास नहीं रहती। नरेंद्र कोहली ने अपने 'हत्यारे' नाटक में मानवीय संवेदनाओं को वाणी देनेवाली भाषा का प्रयोग किया है। इस नाटक के द्‌वारा मानवीय नियति की त्रासदी को उभारने का प्रमुख उद्‌देश्य है। उदा. मैं भी यही कहती हूँ। अपने लिए ही नहीं, दूसरों के लिए भी कहती हूँ। हे भगवान ! तू किसी से उसकी संतान ऐसे मत छीन। जब संतान दी ही है, तो उसकी रक्षा कर। नरेंद्र कोहली के 'निर्णय रूका हुआ' नाटक में आम बोलचाल की भाषा के शब्दों के साथ-साथ अंग्रेजी शब्दों, वाक्यों और वाक्याशों की भरमार दिखाई देती है, क्योंकि यहाँ उच्च वर्ग के शिक्षित पात्रों की भाषा का प्रयोग है। इस नाटक में नाटककार ने समकालीन वर्तमान जीवन के संघर्ष को नाटक में ही दूसरे काल्पनिक नाटक की कथा के द्‌वारा पात्रों के तीव्र मानसिक द्‌वंद्‌व को और युग सापेक्ष्य विविध भंगिमाओं एवं बोधों को प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया। उदा. वकील को अपने यजमान से पैसा लेकर कानून को उसके पक्ष में मरोड़ना होता है- उचित हो या अनुचित....। इससे वर्तमान स्थिति का चित्र सामने आता है। उसी प्रकार वर्तमान व्यवहार का एक उदा. मामला साफ है। मकान गिरता। उसके नीचे दबकर कोई मरता। हम हत्या का मामला बनाते। तुम नीचे दबकर हमारी सेवा करते और तुमने उसमें रूकावट डाल दी....। इस पुलिस इन्स्पेक्टर के वाक्य में सरकारी व्यवस्था का चित्र स्पष्ट होता है।

नरेंद्र कोहलीजी के नाटकों की भाषा में बोलचाल के शब्दों के साथ-साथ तद्‌भव, तत्सम, देशज, अरबी, उर्दू, फारसी शब्दों के साथ ज्यादातर अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग दिखाई देता है। उनके नाटकों में विकृत, अपशब्द, मुहावरें, सुक्तियाँ, वाक्य-विन्यास, व्यंग्य आदि शब्दों के विविध रूप भाषा में घुलकर प्रयुक्त हुए हैं। जीवन की सच्चाई को उसके नंगेपन के साथ प्रस्तुत करने एवं आकर्षकता पैदा करने के उद्‌देश्य से नरेंद्र कोहली जी ने अभिजात्य मर्यादा को त्यागकर भाषा का एक भिन्न ही तेवर अपनाया है।

5.3 शैली -

हिंदी साहित्यिक विधाओं में नाटक साहित्य समय की कसौटी पर खरा उतरा है, क्योंकि नाटक विधा में शैली को पाठक की दृष्टि से प्रस्तुत किया जाता है। शैली शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के 'शील' से मानी जाती है। शील का अर्थ है- स्वभाव- मन की विशेष प्रकृति का सूचक, लक्षण-स्वरूप की विशेषता का, झुकाव रुचि की विशेषता का और आदत कर्म की विशेषता का। इस प्रकार कह सकते हैं कि शैली का संबंध उस रचना के साथ-साथ रचनाकार से भी होता है। डॉ. श्याम सुंदरदास शैली के बारे में लिखते हैं - "किसी कवि या लेखक की शब्दयोजना, वाक्यांशों का प्रयोग, वाक्य की बनावट और उसकी ध्वनि आदि का नाम ही शैली है।"[111] तो गुलाबरायजी के मतानुसार- "शैली अभिव्यक्ति के उन गुणों को कहते हैं, जिन्हें लेखक या कवि अपने मन के प्रभाव को समान रूप से दूसरों तक पहुँचाने के लिए अपनाता है।"[112] प्लेटो- "जब विचार को तात्विक रूपाकार दे दिया जाता है तो शैली का उदय होता है।"[113] अरस्तु- "शैली से वाणी में वैशिष्टय (चमत्कार) का समावेश होता है।"[114]

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पट होता है कि शैली का लेखक की आत्मिक या वैयक्तिक विशिष्टता, विचारधारा एवं उसकी विभिन्न प्रवृत्तियों से घनिष्ठ संबंध होता है। शैली शिल्प नाटक के कथानक, चरित्र-चित्रण एवं भाषा आदि को एक नए ढंग से प्रस्तुत करने का कार्य करता है, जिससे नाटक में नवीनता एवं अभिनव प्रयोग उपस्थित हो सके। शैली लेखक और पाठक के बीच का संपर्क एवं उद्विप्ति का साधन है।

लेखक अपनी व्यक्तिगत अनुभूति को किसी अलग ढंग से प्रस्तुत करने की कोशिश में नए-नए प्रयोग करता है। उसी वक्त लेखक की शैली पर उसकी प्रकृति का थोड़ा बहुत प्रभाव प्रायः दृष्टिगोचर होता है। नरेंद्र कोहली की शैली समय-समय पर विभिन्न रूप ग्रहण करती रही है। कभी वे रामायण की कथा के द्वारा आधुनिक परस्थिति को 'शम्बूक की हत्या' द्वारा स्पष्ट करते हैं तो कभी 'हत्यारे' नाटक में क्लिष्ट शब्दावली का प्रयोग करके पात्रों के मनोभावों का संघर्ष स्पष्ट करते हैं, तो 'निर्णय रूका हुआ' नाटक में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करके आधुनिक युगीन मध्यवर्गीय कुटुंब के चित्रण से वर्तमान सरकार की परिस्थिति का सफल अभिव्यक्ति के लिए

दृशकाल वातावरण का एक खास ढंग से प्रयोग करते हैं। नरेंद्र कोहली अपने नाटक के आशय को विशेष पद्धति से व्यक्त करने का प्रयास करते हैं, उसे ही उनकी खास शैली कहा जा सकता है।

नरेंद्र कोहली के नाटक की भाषाशैली में यह विशेषता है कि उसमें स्पष्टता, संक्षिप्तता, विविधता, पाठकों के प्रति सद्व्यवहार इन विशेषताओं के कारण लेखक एक सफल शैली की अभिव्यक्ति द्वारा नाटक को नया रूप प्रदान करने में सफल रहे हैं।

5.4 विविध शैलियाँ -

नाटककार अपने नाटकों में विभिन्न शैलियों का प्रयोग कथावस्तु के अनुसार करता है। नरेंद्र कोहली ने भी अपने आलोच्य नाटकों में विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया है। नाटककार विभिन्न शैलियों के द्वारा कथानक में वैशिष्टय लाता है। उदा. दृश्यों के प्रसंग में वर्णनात्मकता, पात्रों में चित्रणात्मकता, विचारों में विवेचनात्मकता, कार्य एवं घटनाओं में विवरणात्मकता, परिस्थितियों में व्याख्यात्मकता एवं भावों में भावात्मकता, व्यंग्य में व्यंग्यात्मकता, पुरातण में मिथकीयता का थोड़ी बहुत मात्रा में प्रयोग करता है। नरेंद्र कोहली के आलोच्य नाटकों में निम्न शैलियों के दर्शन होते हैं।

5.4.1 वर्णनात्मक शैली -

"विभिन्न पदार्थों एवं स्थूल दृश्यों के वर्णन में प्रायः इस शैली का प्रयोग होता है। इसमें विभिन्न पदार्थों एवं परिचय मात्र प्रस्तुत होता है।"[115] वर्णनात्मक शैली परंपरागत मानी गई है। वर्णनात्मक शैली में प्रत्येक दृश्य का सरल और सीधे-सादे ढंग से वर्णन किया जाता है। नाटक के पात्रों का परिवेश तथा उनकी परिस्थिति के चित्रण के माध्यम से संपूर्णता का आभास दिलाने के लिए वर्णनात्मक शैली विशेष रूप से उपयोगी है। नाटक में चित्रित घटनाओं तथा बाह्य दृश्यों को इस शैली में अभिव्यक्त करके यथार्थता को स्पष्ट किया जाता है। उससे श्रोता के मन में नाटक को देखने की रुचि निर्माण होती है।

नरेंद्र कोहली के 'शम्बूक की हत्या' नाटक की कथा मिथकीय है। फिर भी उसमें वर्णनात्मक शैली के द्वारा दोनों युगों का चित्रण पात्रों की सूक्ष्म क्रियाएँ, चेष्टाएँ तथा परिस्थिति और परिवेश के अनुसार नाटक में निर्माण करने में नरेंद्र कोहलीजी सफल हुए हैं। उदा. 'शम्बूक की हत्या' नाटक में सब-इन्स्पेक्टर चपरासियों को प्रश्न पूछता है कि 'हत्या किस प्रकार हुई' तो

चपरासी-2 अपने काल्पनिक विचार स्पष्ट करता है- "बात डकैती की ही है, पर यह डाका मारने नहीं गया था, डाका रोकने गया था। भूल इससे केवल इतनी हुई कि वह यह नहीं जानता था कि पुलिसवाले ही रात को वर्दी उतारकर डाका मारने आए हुए थे। इसने उन्हें रोकना चाहा, समझाना चाहा। उन्होंने उसे गोली मार दी और कह दिया कि डाकुओं के साथ हुई भिड़ंत में यह मारा गया।"[116]

मिथक के वर्णन द्वारा दोनों युग की परिस्थिति का चित्रण नरेंद्र कोहलीजी ने 'शम्बूक की हत्या' नाटक में प्रस्तुत किया है- "विश्वामित्र : राम ! इन्हें भी मारो। ये दो राक्षस हैं- गुंड़ागर्दी और काला धन। तुम्हारे पिता ने इन्हें उचित मूल्य की दुकान का लाइसेंस दिया हुआ है, पर ये लोग खुले बाजार में कुछ भी नहीं बेचते। राशन का कोटा भी झूठ बोलकर गायब कर देते हैं और काले बाजार में बेच देते हैं। जनता भूखी मर रही है और ये लोग कोई-न-कोई बहाना बना, बाजार से आवश्यक वस्तुएँ गायब कर उनके मूल्य बढ़ाते जा रहे हैं। मैं जब सहकारिता आंदोलन चलाकर कृषकों से अन्न खरीदने का यज्ञ आरंभ करता हूँ तो ये लोग अपने गुंड़ों और सत्ताधारी दल के सदस्यों की सहायता से मारपीट कर खून बरसा देते हैं। राम ! इन्हें मारो और मेरा उपभोक्ता सहकारी आंदोलन सफल बनाओ .....।"[117]

नरेंद्र कोहली का दूसरा नाटक 'हत्यारे' मनोविश्लेषणात्मक शैली में लिखा है, किंतु उसमें भी कहीं-कहीं वर्णनात्मक शैली दिखाई देती है। शालिनी रमेश की हत्या का वर्णन करके पड़ोसियों को बता रही है- "रात को साथवाले फ्लैट में कुछ खटर-पटर हुई। रमेश उठकर गया। उसने दरवाजा खटखटाया। आवाज दी, 'भाई साहब !' भीतर से कोई उत्तर नहीं मिला। वह दरवाजा खटखटाता ही चला गया। तब भीतर से किसी ने कहा, 'शोर मत करे। अपनी जान की खैर चाहते हो तो चुपचाप टल जाओ।' सहसा दरवाजा खुल गया और पाँच-छः लोग बाहर निकल आए। उनके हाथों में लाटियाँ थी। रमेश का मित्र तो एक ही लाठी खाकर भाग गया। रमेश उनसे गुँथ गया। उनके पास लाठियों के साथ-साथ चाकू भी थे। उन्होंने रमेश को घेर लिया और चाकुओं से उसे गोद डाला। चार-पाँच पेट में लगे, दो-एक छाती में, दो-एक पीठ में...."[118] यहाँ वर्णनात्मक शैली के दर्शन होते हैं।

तीसरे नाटक 'निर्णय रूका हुआ' में नाटककार ने मध्यवर्गीय व्यक्ति को मकान बनवाने के लिए जो समस्याएँ आती हैं इसका वर्णन किया है। लकड़ी की समस्या को सुलझाते वक्त वर्मा समाजव्यवस्था का वर्णन करते हैं। इस पर शर्मा सहमत नहीं, क्योंकि उनकी दृष्टि से सारे लकड़ी के डिपो इंचार्ज, व्यापारियों के साथ ऐसी स्थिति नहीं हो सकती की उनकी पत्नी बीमार नहीं होगी तो वर्मा बताते उनके घर में लड़की की शादी, मकान बनवाना, बच्चे की पढ़ाई आदि कोई भी समस्या हो सकती है- ''पत्नी स्वस्थ होगी तो लड़की जवान होगी.... दहेज की समस्या होगी। या लड़का बेकार होगा.... उसकी नौकरी लगवाने या धंधा जमाने के लिए रुपयों की जरूरत होगी। न हो तो मकान पुराना होगा, उसकी मरम्मत.... नहीं तो नया मकान बनवाना या खरीदना होगा, ...कोई-न-कोई बात तो होगी ही। किसी-न-किसी बहाने तो वह महाजन के चंगुल में फँसेगा ही। महाजन उससे वह करवाएगा ही। महाजन नहीं करवाएगा तो वह अपने लालच में करेगा....'' इस पर शर्मा पूछते हैं यह जरूरी है। तब वर्मा बताते - ''निन्यानवे प्रतिशत ! एक ओर बड़ी जिम्मेदारियाँ और खाली जेबे, दूसरी ओर भरी थैलियाँ और उत्तरदायित्व-शून्यता। फिर राजनीति में ऊपर से नीचे तक रिश्वतखोरी की अखंड परंपरा ! वहाँ और हो ही क्या सकता है ?''[119] यहाँ वर्णनात्मक शैली नजर आती है।

वर्णनात्मक शैली नाटक की कथा की लयता को टूटने नहीं देती तो उसे गतिशील बनाकर नाटक की रोचकता को प्रेक्षक के सामने प्रस्तुत करती है।

5.4.2 चित्रणात्मक शैली -

''सामान्यतः विभिन्न व्यक्तियों के बाह्य रूप-विधान में इस शैली का प्रयोग है।''[120] व्यक्तियों के आंतरिक गुणों के साथ-साथ बाह्य गुणों का चित्रण किया जाता है। उदा. 'शम्बूक की हत्या' नाटक की शुरूवात में ही लेखक ने ब्राह्मण का बाह्य वर्णन स्पष्ट किया है- ''ब्राह्मण अपनी आँखें शून्य में गड़ाए, जड़ बनाए, बिना रूके आगे बढ़ता जाता है। विपरीत दिशा से तेजी से आती हुई कार में आने का अभिनय करता हुआ एक व्यक्ति, उसे लगभग झटककर आगे बढ़ जाता है। ब्राह्मण उसकी झपट में आते-आते बच जाता है।''[121] इस प्रकार लेखक ने नाटक में सब-इन्स्पेक्टर का प्रवेश होता है, तो उसका वर्णन- ''सब-इन्स्पेक्टर की आँखें रात्री-जागरण तथा क्रोध है कि उसकी खोपड़ी में भी चढ़ी हुई हो; पर बात केवल आँखों की है। उसके हाथ में एक

छड़ी है। वह घूर-घूर कर कभी इन तीनों को और कभी कपड़े में ढके हुए ब्राह्मण के बेटे के शव को देख रहा है।''[122]

नरेंद्र कोहली ने अपने दूसरे नाटक 'हत्यारे' में प्रत्येक पात्र के ब्राह्मण वर्णन को प्रसंगानुरूप स्पष्ट किया है। उदा. बनारसीदास को अनिल ऑपरेशन संबंधि पूछता है, तो वह बात को टालते हैं। उस समय ''मुस्कराने लगता है। फिर उसके चेहरे से मुस्कान गायब हो जाती है। व्यंग्य और प्रहार की मुद्रा अपनाकर।''[123] इसी तरह बनारसीदास और शांति में रमेश के लिए झगड़ा होता है, तब शांति के चेहरे के भाव - ''उसकी आँखों में एक खूँखार भाव उभरता है। बनारसीदास उसका सामना नहीं कर सकता। मुँह दूसरी ओर फेर लेता है।''[124] यहाँ इन पात्रों के चेहरे पर के भाव चित्रात्मक शैली के दर्शन कराता है।

नाटककार, नरेंद्र कोहली ने अपने तीसरे नाटक 'निर्णय रूका हुआ' में भी चित्रणात्मक शैली द्वारा पात्रों के बाह्य वर्णन को स्पष्ट किया है। जैसे- शर्मा और निकुंज की बातें चल रही हैं तो शर्मा- ''उठकर टहलने लगता है, जैसे या तो बहुत कठोर बात कहने की हिम्मत बटोर रहा हो, या मन में आई किसी कठोर बात को कहने से स्वयं को रोक रहा हो। अंत में कोई निश्चय कर, उन लोगों की ओर देखता है।''[125] उसी प्रकार जब हरिसिंह के घर माहेश्वरी और करूणा आते हैं, उस समय का दृश्य चित्रात्मकता से उभारता है। ''माहेश्वरी और करूणा कुर्सियों पर बैठ जाते हैं। हरिसिंह कई बार उत्सुक्ता, सम्मोहन और प्रलोभन में करूणा की ओर देखता है और फिर जैसे बलात् स्वयं को सँभाल, मुँह फेरकर प्रश्नभरी दृष्टि से माहेश्वरी की ओर देखता है। जब माहेश्वरी कुछ नहीं कहता, तो हरिसिंह भी जाकर दीवान पर बैठ जाता है।''[126] यहाँ चित्रात्मक शैली के दर्शन होते हैं।

इस तरह चित्रणात्मक शैली द्वारा लेखक ने अपने नाटकों के पात्रों के बाह्य रूप विधान को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

5.4.3 मनोविश्लेषणात्मक शैली -

''वास्तव में चरित्र-चित्रण की यह विश्लेषणात्मक पद्धति ही है, पर जब यह शैली मनोविज्ञान से अनुप्राणित होती है, तब उसे मनोविश्लेषणात्मक शैली कहा जाता है।''[127] नरेंद्र कोहली ने ज्यादा तर अपने नाटकों में मनोविश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग किया है। पात्रों के

मनोभावों के आंतरिक संघर्ष को उजागर करने का प्रयास इस शैली के द्वारा हुआ है। नरेंद्र कोहली मनोवैज्ञानिक नाटककार नहीं हैं, तथापि उनके नाटकों में खंड़ित व्यक्तित्व का अंकन हुआ है। उदा. ब्राह्मण सरकार पर आलोचना करते हुए कहता है- ''तुम कैसे जानते हो कि श्मशान का रास्ता इधर से होकर नहीं है ? तुम भारत का सर्वेक्षण हो क्या ? मैं कहता हूँ कि सारा देश इसी रास्ते से होकर श्मशान जा रहा है, भूत-पिशाच उसे खा रहे हैं, चुड़ेल उसे नोच रही है। कोई रक्त पी रहा है, कोई मांस नोच रहा है, कोई हड्डियाँ चबा रहा है और यह सब सरकार की अनुमति से हो रहा है- सरकारी लाइसेंस लेकर। समझे ? सरकार विष फैलाने का परमिट देती है और विष फैलानेवालों से उसका टैक्स लेती है- शारीरिक विष, मानसिक विष, चारित्रिक विष.... तुम यदि कुछ पढ़-लिखे होते, तो मैं तुम्हें बताता कि तुम्हारी सरकार ने देश को बीभत्स रस का सुंदर उदाहरण बना दिया है। अब रसवादी आचार्य काव्यशास्त्र में बीभत्स रस के लक्षण के पश्चात् कविता की पंक्तियाँ उदाहरण रूप में उद्धृत नहीं करते। वे सीधे-साधे लिख देते हैं 1973 ई. का भारत। ....तुम्हें कुछ मालूम भी है, बिहार में अकाल पड़ा है अन्न का और सारे देश में अकाल पड़ गया है बुद्धि और चरित्र का। तुम....''[128] यह मनोविश्लेषण शैली का ऊँचा नमूना है।

दूसरे नाटक 'हत्यारे' में लेखक ने पात्रों के मनोभावों के साथ-साथ आंतरिक संघर्ष को भी उजागर करने का प्रयास किया है- बनारसीदास अधिक संतान होने का लाभ बताते हुए एक संतान होने पर क्या हालत बनती इसका वर्णन देखिए- ''अपनी बात ही कह रहा हूँ। एक ही बेटा होता न हमारा भी तो तुम बहू के बर्तन धो रही होती। मैं उनके बच्चों को स्कूल पहुँचाने जाता और भोगल से सब्जी खरीदता हुआ, थका-हारा लड़खड़ाता हुआ घर आता।''[129] बनारसीदास रमेश की बीमारी की खबर सुनकर शालिनी से चर्चा कर रहे हैं। उस वक्त शांति उनकी पत्नी गुस्से में आकर कहती है- अभी क्या है, अभी तो ये एक से एक भयंकर बीमारियों का नाम ले-लेकर मुझे डराएँगे, तड़पाएँगे। ये तो चाहेंगे ही कि मेरी नींद हराम हो जाए और मैं रातभर बिस्तर पर करवटें बदलती रहूँ....''[130] यहाँ भी मनोविश्लेषण शैली उभर आयी है।

नरेंद्र कोहली ने अपने तीसरे नाटक 'निर्णय रूका हुआ' में पारिवारिक जीवन का चित्रण किया है। इस नाटक में पारिवारिक मनोभावों के संघर्ष को स्पष्ट किया है। जब शर्मा घर के सभी सदस्यों को बुलाकर टी. वी. के बारे में चर्चा करनेवाले हैं, यह सुनकर उनका छोटा बेटा

निकुंज कहता- ''पड़ोसियों को भी बुला लाऊँ, ताकि वे जान सके कि किन शर्तों पर वे हमारा रंगीन टी. वी. देख सकेंगे।''[131] उसी प्रकार गाड़ी बेचने के शर्माजी के निर्णय पर उनकी पत्नी सावित्री कहती है- ''नहीं.... हरगिज नहीं। घर की चीजों पर हमारा भी कुछ अधिकार है। कमाते तुम हो, पर घर मैं चलाती हूँ। तुम्हारा घर चलाने के लिए मैंने नौकरी नहीं की। उसके बदले में तुम्हारी आय पर मेरा भी अधिकार है। गाड़ी मैंने अपने शौक से खरीदी थी। तुम तो तब भी खरीदने के विरूद्ध थे। ....नहीं, मैं तुम्हें गाड़ी नहीं बेचने दूँगी।''[132]

इस प्रकार नरेंद्र कोहली जी ने अपने नाटकों में पात्रों के आंतरिक संघर्ष को मनोविश्पेषणात्मक शैली द्वारा स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है।

5.4.4 विश्लेषणात्म शैली -

नरेंद्र कोहली के नाटक एक विचारप्रधान नाटक होने के कारण उसके प्रमुख पात्रों के मध्य चलनेवाले तर्क-वितर्क एवं बौद्धिक विश्लेषण का परिचय मिलता है। यह तर्क-वितर्क एवं बौद्धिक विश्लेषण इस विश्लेषणात्मक शैली द्वारा आलोच्य नाटकों में कुछ स्थलों पर तर्क-वितर्कमयी या विश्लेषणात्मक शैली का सुंदर प्रयोग हुआ है। जैसे- ब्राह्मण राजनेताओं के बारे में क्लर्क से बातें कर रहा है कि नेताओं को भी ज्ञान नहीं हुआ कि भाषा और रोटी में क्या संबंध है ? ब्राह्मण क्लर्क को यही प्रश्न पूछते हुए कहता है- ''हाँ ! तुम्हारी बात ! मेरा विचार है कि ये नेता लोग भी रोटी और भाषा का संबंध जानते हैं। वे जानते हैं कि जनता की रोटी, जनता की भाषा से जुड़ी हुई है। जनता की भाषा आयी, तो जनता को तो अपनी रोटी मिल जाएगी पर नेताओं की अपनी रोटी छिन जाएगी- क्योंकि वे लोग स्वयं अंग्रेजी की रोटी खा रहे हैं।''[133] ब्राह्मण क्लर्क से देश में लोगों की मृत्यु के ऊपर तक प्रस्तुत करते हुए कहता है- ''हाँ ! मैंने खूब सोचा है कि कोई पूर्णायु प्राप्त किए बिना क्यों मर जाता है। जब शासन बेईमान हो जाता है, जनता के धन का जन-कल्याण के लिए उचित प्रयोग न कर अपने विलास के लिए उसका व्यय किया जाता है, तो उत्पादन का संतुलन बिगड़ जाता है। लोगों को आवश्यकतानुसार खाने को नहीं मिलता। उनके भीतर रोग के कीटाणु घर करने लगते हैं। रोगों का निदान नहीं होता। उस दुर्बलता की अवस्था में व्यक्ति जीवन का संघर्ष चला नहीं पाता तो मर जाता है। उसके मरने के लिए तुम दोषी हो, सरकार दोषी है।''[134] तर्क-वितर्कमयी शैली का या विश्लेषणात्मक शैली का यह सुंदर उदाहरण है।

नरेंद्र कोहली जी ने अपने दूसरे नाटक 'हत्यारे' में रमेश की हालत गंभीर है, इस खबर पर बनारसीदास और शांति सोच रहे हैं, तो शांति बिच में ही उसकी विवाह की बात छेड़ती तो बनारसीदास तर्कमयी बातें प्रस्तुत करते हुए कहते हैं- ''हाँ ! विवाह हो गया होता तो बहू और बच्चों की जिम्मेदारी कौन लेता ? तुमसे घंटाभर तो बैठा नहीं जाता। तुम उसके बच्चे पालती या मैं उनके लिए नौकरी करने निकलता।''[135] शालिनी और अनिल रमेश के दोस्त खन्ना के बारे में बात कर रहे हैं, तो शालिनी तर्क पेश करती हुई कहती है- ''मैं तो कई बार यह सोचती हूँ कि संयोग ही था कि वह रमेश के साथ था, नहीं तो रमेश का कहीं देहांत हो जाता और हमें पता तक न चलता। पुलिस हमें खोज ही न पाती, या खोजती ही नहीं। लावारिस लाश की अंत्येष्टि कर दी जाती और रमेश सदा को हमारे लिए एक पहेली बना रहता.....''[136]

'निर्णय रूका हुआ' नाटक में मकान बनवाते समय किस प्रकार कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है इसका उल्लेख शर्मा करते समय श्रीवास्तव कहते हैं- ''ये शेल्फें और अलमारियाँ लकड़ी की ही बनवाइए। टीक की वार्निश चमकेगी तो बंगले की शोभा ही कुछ और होगी।''[137] लकड़ी को लेकर जब पुलिस-इन्स्पेक्टर के पास आते तो अपने हिस्से की माँग में- ''मामला साफ है। मकान गिरता। उसके नीचे दबकर कोई मरता। हम हत्या का मामला बनाते। तुम डरकर हमारी सेवा करते और तुमने उसमें रूकावट डाल दी....।''[138]

5.4.5 भावात्मक शैली –

''भावों के अनुकूल उत्तेजना चंचलता प्रवाहपूर्णता या विक्षेप मिलता है।''[139] भावात्मक शैली द्वारा पात्रों की आंतरिक भावनाओं का सफल चित्रण हुआ है। नरेंद्र कोहली के नाटकों में भावात्मक शैली में उपयुक्त टिप्पणियाँ, पात्रों के भावात्मक वार्तालाप और उनके अधूरे वाक्यों के माध्यम से आंतरिक भावनाओं की सफल अभिव्यंजना भी की है।

'शम्बूक की हत्या' नाटक में ब्राह्मण के हाथों में अपने बेटे का शव था उसे भूमि पर रख देता है- ''भगवान ! यह मेरा बेटा है....''[140] नाटक में रामायण का दृश्य बनाया है- ''परशुराम : मैंने सदा क्षत्रियों का नाश किया है, तुम्हार भी नाश करूँगा, क्योंकि तुम भी क्षत्रिय हो.....।''[141] यहाँ भावात्मक शैली के दर्शन होते हैं।

'हत्यारे' नाटक में तो पात्रों के जीवन का चित्रण भावात्मक शैली द्वारा स्पष्ट किया है। उदा. ''शांति : इनकी तो आदत ही है, बेटा ! ऐसी बातें करनी की। अपने बच्चे भी होते न औरों के बच्चों जैसे....।''[142] शालिनी पड़ोसियों को रमेश की हत्या के संबंध में बताते हुए कहती है- ''रमेश उनसे गुँथ गया। उनके पास लाठियों के साथ-साथ चाकू भी थे। उन्होंने रमेश को घेर लिया और चाकुओं से उसे गोद डाला। चार-पाँच पेट में लगे, दो-एक छाती में, दो-एक पीठ में....।''[143] यहाँ शालिनी के रमेश के प्रति भावात्मकता शैली द्वारा स्पष्ट होती है।

'निर्णय रूका हुआ' नाटक में शर्मा मकान बनवा रहे हैं, तो उनके घर में मकान संबंधी चर्चा हो रही है। उसी समय हर एक पात्र को आंतरिक भावना को लेखक ने स्पष्ट किया है। उदा. ''शर्मा : जानता हूँ **You people are now grownups** बच्चे नहीं हो। दुनिया के नए तौर-तरीकों को मुझसे ज्यादा समझने लगे हो। मैंने अपने जीवन का अतीत तो इस मकान पर लगा दिया है, पर अपना भविष्य इसके कारण बंधक नहीं रखना चाहता ....।''[144]

शर्मा के घर में टी. व्ही. और मकान की बातें हो रही हैं, तो गीता और सतीश में झगड़ा होता है और सतीश गुस्से में ''तू चुप कर न ! बीच में बक-बक किए जाती है। मकान महत्त्वपूर्ण है या टी. वी.....''[145]

इस प्रकार नाटककार नरेंद्र कोहलीजी ने अपने नाटक में भावात्मक शैली के द्वारा पात्रों की आंतरिक भावना का सफलता पूर्वक चित्रण किया है।

5.4.6 व्याख्यात्मक शैली -

''सामान्यतः किसी परिस्थिति-विशेष के विश्लेषण में व्याख्यात्मक शैली का उपयोग होता है।''[146]

'शम्बूक की हत्या' नाटक में ब्राह्मण और क्लर्क के बातचीत में ब्राह्मण क्लर्क को अपने अस्तित्व की व्याख्या करते हुए कहता है- ''मैं त्रेता में राम हूँ, द्वापर में कृष्ण हूँ और आजकल एक क्लर्क हूँ।''[147] इसी तरह क्लर्क जब बीड़ी फेककर उसे बूटों से बूझाता है, उस समय टाट जलता है। यह टाट क्यों जलाया, ब्राह्मण क्लर्क से कहता है- ''यदि पुराना टाट जलेगा नहीं तो नया कैसे खरीदा जाएगा ? नया खरीदा नहीं जाएगा तो टाट का कारखाना बंद हो जाएगा और वहाँ काम करनेवाले लोग बेकार हो जाएँगे। मैंने पुराना टाट नहीं जलाया है, अनेक लोगों को

नौकरी का एक्सटेंशन-लेटर दिया है ।''[148] इन दोनों उदा. से नाटक में व्याख्यात्मक शैली को महत्त्व दिया है, यह स्पष्ट हो जाता है ।

'हत्यारे' नाटक में अपने बेटे की मृत्यु पर शांति- ''मैं भी यही कहती हूँ । अपने लिए ही नहीं, दूसरों के लिए भी कहती हूँ । हे भगवान ! तू किसी से उसकी संतान ऐसे मत छीन । जब संतान दी ही है, तो उसकी रक्षा कर ।''[149] बनारसीदास का बच्चों के साथ जो व्यवहार था, उस पर सुरेश कहता है- ''पापा का तो एकमात्र सीधा फरमान था- घर छोड़ दो । पापा ने बाप बनकर तो कभी कुछ देखा ही नहीं, बस जीवन-भर ट्रैफिक कांस्टेबल के समान हमारा चालान ही करते रहे....''[150] इन उदाहरणों से पात्रों के जीवन की परस्थितियों का चित्रण स्पष्ट होता है ।

'निर्णय रूका हुआ' इस नाटक में नरेंद्र कोहलीजी ने मकान बनवाने में जीन समस्याओं का सामना करना पड़ता है उस पर घर के आदमियों के साथ भी झगड़ा होता है । शर्मा और सतीश का झगड़ा होने पर शर्मा गुस्से में आकर कहता है- ''पहले बाप बच्चों को नैतिकता सिखाता था, अब बच्चे बाप को अनैतिकता सिखाते हैं ।''[151] सावित्री और गीता में जायदाद के बारे में नोक-झोक होती तो गीता गुस्से में कहती है- ''पता नहीं इस देश में कानून किसके लिए बनते हैं । यहाँ तो स्वयं स्त्री होकर भी माँ नहीं चाहती की बेटी को जायदाद का हिस्सा.....''[152]

इन पात्रों के संवादों से नाटककार नरेंद्र कोहली ने जीवन के महत्त्वपूर्ण प्रसंगों का वर्णन व्याख्यात्मक शैली का प्रयोग करके किया है ।

5.4.7 मिथकीय शैली -

'मिथक पुरातन को वर्तमान परिस्थिति से जोड़ता है । 'शम्बूक की हत्या' नाटक पौराणिक के साथ मिथकीय बनता है ।

'शम्बूक की हत्या' मोटे तौर पर एक मिथकीय नाटक है । सामयिक और राजनीतिक यथार्थ पर चोट करनेवाले अनेक व्यंग्यात्मक प्रसंग प्रस्तुत नाटक में मिलते हैं । उदा. ''क्लर्क : तुम दशरथ नहीं हो, जिन्होंने पुत्र के वियोग में प्राण त्याग दिए थे । आजकल लोग केवल कुर्सी के वियोग में प्राण त्यागते सुने जाते हैं ।''[153] लेखक ने रामायण के पात्रों आपसी संवादों के द्वारा आधुनिक युग का चित्र किया है । ''विश्वामित्र : दशरथ ! तू राक्षसों को मार देगा, तो अगले

चुनाव में तुझे वोट कौन देगा ? तेरे चुनाव फंड में धन कहाँ से आएगा ?''[154] इन उदाहरणों में मिथकीय शैली के दर्शन होते हैं।

'निर्णय रूका हुआ' नाटक में सरकारी व्यवस्था पर वर्माजी के व्यंग्य को सुनकर माहेश्वरी सत्ताधारी तो सतीश विरोधी दल के सदस्य होने के कारण प्राचीन काल के राजा को प्रतीक के रूप में लेकर आधुनिक बात को स्पष्ट करते हुए कहते हैं- ''मंत्री : महाराज ! सहस्त्रों ग्रामों में पीने का पानी तक नहीं है। वहाँ कुएँ खुदवाने हैं। रेगियों के लिए चिकित्सालय नहीं है। बच्चों के लिए पाठशालाएँ नहीं हैं। प्रजा या तो मर रही है या देश छोड़-छोड़ कर जा रही है.....''[155] इस पर राजा भी अपना मत बताते हुए कहता है- ''जिनके पास आजीविका नहीं है, राज्य को कर देने के लिए धन नहीं है, उनका देश छोड़ जाना ही अच्छा है, जो मर रहे हैं, उन्हें मरने दो- पिंड छूटे इन रोगियों और बूढ़ों से। न कुछ काम, न धाम, पर माँगते ही रहते हैं कुछ-न-कुछ।''[156] इस प्रकार नाटककार ने वर्तमान स्थिति का जिक्र पौराणिक कथा के पात्रों के द्‌वारा मिथकीय शैली में स्पष्ट किया है।

5.4.8 संवाद शैली -

संवाद शैली या कथोपकथन द्‌वारा पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ दो पद्‌धतियों से स्पष्ट होती है। कभी पात्र के आत्मपरक संवाद द्‌वारा उसका चरित्र स्पष्ट हो जाता है, तो कभी दो पात्रों के परस्पर आलोचनात्मक संवाद किसी अन्य चरित्र की रेखाएँ उभारते हैं। नाटकों के संवाद मुख्यतया वर्तमान मानव जीवन की असंगतियों को प्रस्फुटित करने की क्षमता से युक्त होते हैं। नरेंद्र कोहली के नाटकों में जीवन के नग्न यथार्थ को अभिव्यंजित करने की पूरी ताक़त विद्‌यमान है। उनके नाटकों के संवादों में दिखाई देनेवाली विविधता मानव की जीवन गाथा को सशक्तता से अभिव्यक्त करती है। नरेंद्र कोहली के नाटक के संवादों से मानव जीवन के कटू यथार्थ की वास्तविक अभिव्यक्ति को नाटकों का प्रमुख उद्‌देश्य माना गया है।

'शम्बूक की हत्या' नाटक में ब्राह्मण द्‌वारा शम्बूक की जानकारी देने पर क्रांतिबाबू, क्लर्क उसकी पहचान अपनी दृष्टि से बताते हैं।

''क्रांतिबाबू : 'शम्बूक हेरा-फेरी किए बिना कार्य करनेवाला सरकारी क्लर्क है।'

क्लर्क : 'शम्बूक कमीशन लिए बिना रेलवे-रिजर्वेशन देनेवाला रेलवे कंडक्टर है।'

क्रांतिबाबू : 'शम्बूक दाम न बढ़ानेवाला, उचित मूल्य पर वस्तुएँ बेचनेवाला दुकानदार है।'

क्लर्क : 'शम्बूक यूनिवर्सिटी प्रोफेसर बनकर भी पढ़ने और पढ़ानेवाला अध्यापक है।'

क्रांतिबाबू : 'शम्बूक मंत्री बनकर भी जनता को दिए गए वचन याद रखनेवाला प्रत्याशी है।'

क्लर्क : 'हम शम्बूक को अच्छी तरह जानते हैं।'

क्रांतिबाबू : 'पर तुम्हारा बेटा....?'

ब्राह्मण : 'मेरा बेटा शासन के पाप से मरा है।' ''[157]

ब्राह्मण, क्रांतिबाबू और क्लर्क के संवादों से स्पष्ट होता है कि शम्बूक का शव लेकर ब्राह्मण शासन के पास जाकर बेटे की मृत्यु का कारण पूछ रहा है।

'हत्यारे' नाटक में रमेश की हत्या पर पड़ोसी आकर घटना की जानकारी लेने का प्रयास करते समय -

''शालिनी : 'रमेश उनसे गुँथ गया। उनके पास लाठियों के साथ-साथ चाकू भी थे। उन्होंने रमेश को घेर लिया और चाकुओं से उसे गोद डाला। चार-पाँच पेट में लगे, दो-एक छाती में, दो-एक पीठ में....'

स्त्री - 1 : 'देहांत कहाँ हुआ ?'

शालिनी : 'अस्पताल में।'

पुरुष - 1 : 'उसके साथी ने किसी को पुकारा नहीं ?'

बनारसीदास : 'उस समय वहाँ और कोई था ही नहीं।'

पुरुष 2 : 'अस्पताल कौन ले गया'

बनारसीदास : 'उसका मित्र ही ले गया। पहले थाने ले गया। पुलिसवाले उसे अस्पताल ले गए।'

पुरुष : 'कोई पकड़ा गया क्या ....?'

शांति : 'हमारी बला से ! हमारा बेटा तो गया....''[158]

इस प्रसंग और संवादों द्वारा रमेश के हत्या का चित्र पाठक के सामने आता है।

'निर्णय रूका हुआ' नाटक में संवाद शैली के बहुत से उदाहरण मिलते हैं। शर्मा के मकान की चर्चा दौरान वर्मा पत्रकार होने के कारण मकान का सामान परमिट लाइसेंस कोटे से देने की बात करते हैं। शर्माजी लकड़ी को सस्ते भाव देने की बात करते हैं।

“शर्मा : ‘तो अभी क्या बिगड़ा है ! मकान बीच दोराहे पर खरा है कि पूरा बने या अधूरा ही अड़ा रहे। उसमें लकड़ी का काम हो या सीमेंट और लोहे से ही....।’

वर्मा : ‘आप तो चमत्कार करते हैं भाई साहब ! शुद्ध चमत्कार। अरे, लकड़ी का काम तो लकड़ी से ही होगा। सीमेंट और लोहे से काम चलाएँ, जो अनाथ है- जिनका कोई है नहीं।’

शर्मा : ‘तो फिर दिलवाओ लकड़ी।’

वर्मा : ‘बोलिए, कितनी चाहिए ? क्यों माहेश्वरी !’

माहेश्वरी : ‘क्यों नहीं ! क्यों नही !’

शर्मा : ‘कितना कंसेशन दिलवाओगे ?’

वर्मा : ‘अरे, आप लकड़ी लीजिए, जितनी चाहिए आपको। दाम और रियायत हम देख लेंगे।’

शर्मा : ‘फिर भी ! कुछ मालूम तो हो।’

वर्मा : ‘तो ठीक है। दिल्ली के चौथाई भाव पर। चालीस हजार की लकड़ी कुल दस रुपयों में।’’[159]

इस संवाद योजना से वर्मा पत्रकार होने से जो अफसर, राजनीतिज्ञों से पहचान हैं, उसकी साहयता से शर्मा को दिल्ली से चौथाई भाव पर लकड़ी देने की बात करता है।

इस प्रकार नरेंद्र कोहलीजी ने अपने नाटकों में संवाद शैली द्वारा पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को छोटे-छोटे एवं सहज संवादों को स्वाभाविकता से नाटककार ने अमूर्त भावों और वस्तुओं को गति प्रदान की है। संवादों में पात्रानुकूल भाषा के द्वारा स्वभाव, अंतर्मन की व्यथा का परिचय मिलता है। नरेंद्र कोहलीजी के नाटकों के संवादों में संप्रेषण शक्ति और सुंदरता है।

निष्कर्ष -

आलोच्य तीन नाटकों में नरेंद्र कोहली ने वर्णनात्मक शैली, चित्रणात्मक शैली, मनोविश्लेषणात्मक शैली, तर्क वितर्कमयी या विश्लेषणात्मक शैली, भावात्मक शैली, व्याख्यात्मक शैली, मिथकीय शैली, संवाद शैली आदि शैलियों से हमें परिचित कराया है। ये शैलियाँ नाटक की

प्रकृति को खोलकर रखती है और नाटकीय भावों पर विस्तार से प्रकाश डालती है। इस शैलियों के माध्यम से नाटक के परिवेश का, पात्रों की मानसिकता का, रंगमंचीय स्थिति का चित्रण अच्छे ढंग से उभर उठा है। इन शैलियों में तत्कालीन युग के परिवेश को तथा वातावरण को जिंदा बनाने का प्रयत्न किया है।

आलोच्य शम्बूक की हत्या नाटक में मिथकीय शैली के माध्यम से प्राचीनता को आधुनिकता के साथ जोड़ने का प्रयत्न किया है। निर्णय रूका हुआ में राजा की पुरानी कथा के माध्यम से आधुनिक युगबोध को जोड़ा है। आलोच्य नाटक की बाकी शैलियों से पात्रों के व्यक्तित्व एवं परिवेश का पता चलता है। आलोच्य शैलियाँ लेखकीय भावाभिव्यक्ति का समर्थता के साथ समर्थन करती है।

उपर्युक्त भाषा शैली के प्रकारों के विवेचन के अनुसार हम यह कह सकते हैं कि नरेंद्र कोहलीजी के नाटकों की भाषा शैली सरल, स्पष्ट तथा प्रभावपूर्ण रोचक होने के कारण शैली में नवीनता को प्रकट करके विभिन्न शैलियों को नाटक में स्थान प्राप्त किया है। नरेंद्र कोहलीजी ने किसी निश्चित शिल्प-विधि का प्रयोग नहीं किया। 'शम्बूक की हत्या' नाटक मिथकीय व्यंग्यात्मक शैली में लिखा है, फिर भी इसमें वर्णनात्मक शैली द्वारा दोनों युगों का चित्रण स्पष्ट हुआ है। साथ ही चित्रात्मक शैली द्वारा व्यक्तियों के बाह्य रूप को स्पष्ट किया है। मनोविश्लेषणात्मक शैली में पात्रों के मनोभाव का और विश्लेषणात्मक शैली में पात्रों के भावों के विश्लेषण का चित्रण भावात्मक, संवाद शैली का प्रयोग करके अंतर्मन की गूढ़ एवं रहस्यमयी बातों की अभिव्यक्ति अत्यंत सुंदर ढंग से हुई है।

नरेंद्र कोहलीजी का 'हत्यारे' नाटक मनोवैज्ञानिक शैली में लिखा हुआ होकर भी इसमें पात्रों के आंतरिक संघर्ष को उजागर करते समय वर्णनात्मक, चित्रात्मक, तर्क-वितर्कमयी, भावात्मक, व्याख्यात्मक, सांकेतिक, संवाद शैली का भी सफ़ल चित्र स्पष्ट होता है, जो कथा के अनुरूप प्रयुक्त हुआ है।

नरेंद्र कोहलीजी ने 'निर्णय रूका हुआ' नाटक में संवाद और व्याख्यात्मक शैली द्वारा विभिन्न परस्थितियों पर प्रभाव डालने का प्रयास किया है। साथ ही उन्होंने पात्रों के आंतरिक भावों को मनोवैज्ञानिक, भावात्मक शैली से स्पष्ट करते समय उनकी गहराई को

वर्णनात्मक, चित्रणात्मक, सांकेतिक, परोक्ष शैली द्‌वारा पात्रों के माध्यम से आधुनिक परिस्थिति का व्यंग्यात्मक चित्र खिंचा है।

नरेंद्र कोहलीजी नाटकों के शिल्प-कथ्य को यथार्थ तथा सार्थक ढंग से संप्रेषित करने में सफल हुए हैं, साथ ही तीनों नाटक भी। इस तरह कोहलीजी ने विविध शैलियों का सफल चित्रण अपने नाटकों में प्रयुक्त करके कथावस्तु को विकसित, सुंदर बनाने का प्रयत्न किया है। नरेंद्र कोहलीजी के नाटकों को पाठक पढ़ने के बाद उसकी सहजता, प्रभावपूर्णता, प्रवाहमयी होकर पाठक के दिल को छू जाती हैं। इसलिए उनके संबंध में निष्कर्षतः उनकी शैली, भाषा-शिल्प में सरल एवं बोधगम्य शक्ति है, जो पात्रों के परिवेश के अनुरूप भाषा को उजागर करती हैं। नरेंद्र कोहली को मिथकीय शैली प्रिय लगती है, फिर भी उन्होंने अपने आलोच्य नाटकों के माध्यम से अन्य भाषा शैलियों का भी अच्छे ढंग से प्रयोग करके अपने विचारों, भावों को पात्रों की भाषा-शैली के द्‌वारा संप्रेषित करने का अच्छा प्रयास किया है। इसीकारण भाषा-शैली की दृष्टि से आलोच्य नाटक सफल है।

संदर्भ सूची

1. श्री जयवंत जाधव, मुद्राराक्षस के असंगत नाटक एक अनुशीलन, पृ. 149
2. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (शम्बूक की हत्या), पृ. 8
3. डॉ. विजयकांत धर दुबे, साठोत्तरी हिंदी नाटक, पृ. 192
4. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (निर्णय रूका हुआ), पृ. 145
5. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (हत्यारे), पृ. 59
6. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (शम्बूक की हत्या), पृ. 8, 11, 12, 14, 16, 19, 30, 31, 33, 35, 36, 54
7. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (हत्यारे), पृ. 57, 65, 71
8. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (निर्णय रूका हुआ), पृ. 105, 107, 110, 111, 113, 114
9. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (शम्बूक की हत्या), पृ. 8, 10, 14, 12, 16
10. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (हत्यारे), पृ. 55, 56, 58, 61, 62, 68, 65, 71
11. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (निर्णय रूका हुआ), पृ. 104, 105, 107, 111, 116, 117
12. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (शम्बूक की हत्या), पृ. 8, 9, 11, 12, 14, 16, 18
13. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (हत्यारे), पृ. 55, 57, 59, 60, 61, 62, 64, 67, 68, 70, 71, 75, 76, 78, 79, 80, 86, 101, 102
14. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (निर्णय रूका हुआ), पृ. 104, 105, 107, 109, 110, 111, 112, 113, 114, 116, 117, 119, 120, 121, 123
15. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (शम्बूक की हत्या), पृ. 7, 8, 9, 10, 11, 13, 15, 19
16. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (हत्यारे), पृ. 55, 57, 58, 59, 60, 62, 63, 66
17. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (निर्णय रूका हुआ), पृ. 103, 104, 105, 106, 108, 109, 111, 118
18. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (शम्बूक की हत्या), पृ. 9, 10, 12, 15, 24, 30, 36
19. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (हत्यारे), पृ. 55, 58, 59, 63, 65, 73, 74, 75, 76, 81

20. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (निर्णय रूका हुआ), पृ. 103, 104, 106, 123
21. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (शम्बूक की हत्या), पृ. 8, 17, 23, 30, 48, 49, 54
22. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (हत्यारे), पृ. 59, 60, 87, 102
23. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (निर्णय रूका हुआ), पृ. 112, 117, 121, 130, 140
24. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (शम्बूक की हत्या), पृ. 7, 8, 9, 10, 12, 53
25. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (हत्यारे), पृ. 56, 78, 86, 96
26. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (निर्णय रूका हुआ), पृ. 110, 117, 130, 131, 146
27. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (शम्बूक की हत्या), पृ. 10, 11, 16, 22, 27, 38, 42, 45, 50
28. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (हत्यारे), पृ. 55, 57, 60, 61, 62, 67, 70
29. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (निर्णय रूका हुआ), पृ. 104, 108, 114, 117, 128
30. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (शम्बूक की हत्या), पृ. 12, 14, 20, 24, 29, 35, 43, 44, 45, 48, 51
31. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (हत्यारे), पृ. 60, 61, 62, 63, 65, 67, 68, 70, 71
32. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (निर्णय रूका हुआ), पृ. 107, 108, 111, 112, 114, 115, 116, 117, 119
33. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (शम्बूक की हत्या), पृ. 9, 12, 13, 15, 19, 21, 52, 53
34. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (हत्यारे), पृ. 57, 58, 59, 72, 78, 79
35. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (निर्णय रूका हुआ), पृ. 113, 117, 119, 140, 141
36. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (शम्बूक की हत्या), पृ. 9
37. वही, पृ. 11
38. वही, पृ. 17
39. वही, पृ. 17
40. वही, पृ. 18
41. वही, पृ. 19
42. वही, पृ. 54
43. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (हत्यारे), पृ. 57

44. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (हत्यारे), पृ. 59
45. वही, पृ. 59
46. वही, पृ. 60
47. वही, पृ. 69
48. वही, पृ. 72
49. वही, पृ. 82
50. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (निर्णय रूका हुआ), पृ. 107
51. वही, पृ. 108
52. वही, पृ. 110
53. वही, पृ. 111
54. वही, पृ. 112
55. वही, पृ. 113
56. वही, पृ. 114
57. वही, पृ. 115
58. वही, पृ. 116
59. वही, पृ. 121
60. वही, पृ. 129
61. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (शम्बूक की हत्या), पृ. 10
62. वही, पृ. 18
63. वही, पृ. 23
64. वही, पृ. 26
65. वही, पृ. 25
66. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (हत्यारे), पृ. 56
67. वही, पृ. 69
68. वही, पृ. 69

69. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (हत्यारे), पृ. 69
70. वही, पृ. 85
71. वही, पृ. 91
72. वही, पृ. 102
73. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (निर्णय रूका हुआ), पृ. 110
74. वही, पृ. 113
75. वही, पृ. 130
76. वही, पृ. 131
77. वही, पृ. 135
78. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (शम्बूक की हत्या), पृ. 16
79. वही, पृ. 42
80. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (हत्यारे), पृ. 55
81. वही, पृ. 64
82. वही, पृ. 72
83. वही, पृ. 77
84. वही, पृ. 93
85. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (निर्णय रूका हुआ), पृ. 103
86. वही, पृ. 107
87. वही, पृ. 110
88. वही, पृ. 122
89. वही, पृ. 122
90. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (शम्बूक की हत्या), पृ. 15
91. वही, पृ. 42
92. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (हत्यारे), पृ. 81
93. वही, पृ. 83

94. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (निर्णय रूका हुआ), पृ. 103
95. वही, पृ. 108
96. वही, पृ. 111
97. वही, पृ. 111
98. वही, पृ. 111
99. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (शम्बूक की हत्या), पृ. 25
100. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (हत्यारे), पृ. 58
101. वही, पृ. 89
102. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (निर्णय रूका हुआ), पृ. 108
103. वही, पृ. 114
104. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (शम्बूक की हत्या), पृ. 10
105. वही, पृ. 20
106. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (हत्यारे), पृ. 55
107. वही, पृ. 60
108. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक : (निर्णय रूका हुआ), पृ. 110
109. वही, पृ. 120
110. वही, पृ. 124
111. डॉ. श्यामसुंदरदास, साहित्यालोचन, पृ. 95
112. डॉ. गुलाबराय - सिद्धांत और सिद्धांत, पृ. 180
113. डॉ. गणपतीचंद्र गुप्त, साहित्य शैली के सिद्धांत, पृ. 18
114. वही, पृ. 18
115. वही, पृ. 52
116. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक, पृ. 49
117. वही, पृ. 21
118. वही, पृ. 67

119. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक, पृ. 150

120. डॉ. गणपतीचंद्र गुप्त, साहित्य शैली के सिद्धांत, पृ. 52

121. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक, पृ. 7

122. वही, पृ. 43

123. वही, पृ. 55

124. वही, पृ. 59

125. वही, पृ. 111

126. वही, पृ. 137

127. श्री. जयवंत जाधव, मुद्राराक्षस के असंगत नाटक एक अनुशीलन, पृ. 139

128. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक, पृ. 11

129. वही, पृ. 57

130. वही, पृ. 59

131. वही, पृ. 109

132. वही, पृ. 113

133. वही, पृ. 25

134. वही, पृ. 30

135. वही, पृ. 66

136. वही, पृ. 73

137. वही, पृ. 103

138. वही, पृ. 30

139. डॉ. गणपतीचंद्र गुप्त, साहित्य शैली के सिद्धांत, पृ. 53

140. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक, पृ. 13

141. वही, पृ. 38

142. वही, पृ. 56

143. वही, पृ. 68

144. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक, पृ. 111

145. वही, पृ. 112

146. डॉ. गणपतीचंद्र गुप्त, साहित्य शैली के सिद्धांत, पृ. 53

147. नरेंद्र कोहली के समग्र नाटक, पृ. 16

148. वही, पृ. 26

149. वही, पृ. 69

150. वही, पृ. 83

151. वही, पृ. 110

152. वही, पृ. 113

153. वही, पृ. 19

154. वही, पृ. 20

155. वही, पृ. 155

156. वही, पृ. 155

157. वही, पृ. 42

158. वही, पृ. 68

159. वही, पृ. 116